

GUIDED SANSKAR SEVA



नामकरण संस्कार

Namkaran Sanskar — Complete Vidhi & Mantras

शिशु के जीवन का प्रथम पवित्र संस्कार — नाम और पहचान का उपहार

यह मार्गदर्शिका संस्कार का हर चरण — संकल्प, मंत्र, नाम-घोषणा, सूर्य-दर्शन, आरती और आशीर्वाद समारोह — पूर्ण विधि-विधान सहित सरल एवं व्यवस्थित क्रम में बताती है।

1. संस्कार का उद्देश्य एवं महत्व

नामकरण संस्कार — षोडश संस्कारों में से एक — शिशु के जीवन का प्रथम सामाजिक और आध्यात्मिक संस्कार है। नाम केवल पहचान का माध्यम नहीं, बल्कि शिशु के व्यक्तित्व, भाग्य और जीवन-पथ का आधार है। मनुस्मृति और गृह्यसूत्रों में नामकरण को "आयु, यश, तेज और बल का आधार" कहा गया है।

इस संस्कार में शिशु को भगवान का नाम, कुल की परंपरा और समाज की स्वीकृति एक साथ मिलती है।

महत्वपूर्ण: नामकरण परंपरागत रूप से जन्म के 11वें, 12वें या 21वें दिन होता है — सूतक काल की समाप्ति के बाद। कुछ परिवार 101वें दिन या अन्य शुभ मुहूर्त पर भी करते हैं।

2. नामकरण का समय (मुहूर्त)

परंपरा	समय	विशेष
उत्तर भारतीय	जन्म के 11वें या 12वें दिन	सूतक काल समाप्ति पर। परिवार की शुद्धि के बाद।
दक्षिण भारतीय	जन्म के 11वें या 28वें दिन	नक्षत्र अनुसार मुहूर्त।
गुजराती/ राजस्थानी	21वाँ दिन या विशेष तिथि	पंचांग से शुभ तिथि चुनें।
विलंबित संस्कार	101वाँ दिन या बड़ा मुहूर्त	यदि 11वें दिन संभव न हो — ज्योतिषी से मुहूर्त लें।
शुभ तिथि	द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी	मंगलवार और शनिवार वर्जित माने जाते हैं।

3. हिंदू नाम परंपरा — पाँच प्रकार के नाम

1. राशि नाम (Rashi Naam)

जन्म समय की चंद्र राशि के अनुसार अक्षर से आरंभ होने वाला नाम। ज्योतिषीय उपयोग हेतु।

2. नक्षत्र नाम (Nakshatra Naam)

जन्म नक्षत्र के प्रथम अक्षर से। पूजा, संकल्प और संस्कारों में उपयोग।

3. देव नाम (Dev Naam)

4. कुल नाम (Kula Naam)

किसी देवी-देवता का नाम। जैसे राम, कृष्ण, लक्ष्मी, दुर्गा।
आध्यात्मिक आशीर्वाद हेतु।

परिवार/गोत्र परंपरा से जुड़ा नाम। पूर्वजों का स्मरण एवं कुल की पहचान।

व्यवहारिक नाम (Vyavahaar Naam): पाँचवाँ नाम वह है जो परिवार और समाज में प्रचलित रहेगा — आमतौर पर यही राशि नाम या देव नाम होता है। यही नामकरण संस्कार में घोषित किया जाता है।

4. पूजा से पहले तैयारी

विषय	तैयारी
घर की शुद्धि	पूजा से एक दिन पहले घर में गंगाजल का छिड़काव करें। पूजा स्थान स्वच्छ और सजाएं।
माता-शिशु	माँ और शिशु — दोनों स्नान करवाएं। शिशु को नए/स्वच्छ वस्त्र पहनाएं।
पिता	स्नान करके स्वच्छ धोती/कुर्ता पहनें। संकल्प में पिता की भूमिका प्रमुख है।
स्थान	बड़ी पूजा चौकी। शिशु के बैठने/लेटने का स्वच्छ आसन।
परिवार	दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची सभी उपस्थित रहें।

5. पूजा सामग्री सूची

- गणेश प्रतिमा/चित्र
- कलश (जल भरा)
- लाल/पीला कपड़ा (चौकी)
- अक्षत (कच्चे चावल)
- रोली / कुमकुम
- हल्दी
- चंदन
- पंचामृत सामग्री
- नारियल
- आम के पत्ते
- पुष्प (लाल/पीले/सफेद)
- तुलसी पत्ते
- दीपक + देसी घी
- धूप / अगरबत्ती
- कर्पूर
- पान 5 पत्ते + सुपारी
- फल एवं मिठाई
- मधु (शहद)
- घी
- नई थाली / कटोरी (शिशु हेतु)
- सोने की अंगूठी / चाँदी का चम्मच
- काला धागा / काजल (नजर हेतु)
- आरती थाल
- मौली/राखी धागा

6. पूजा क्रम — संक्षिप्त विवरण

क्र.	चरण	विवरण
1	घर शुद्धि / पुण्याहवाचन	गंगाजल से घर की शुद्धि और पुण्याह घोषणा।
2	गणेश पूजन	संस्कार के शुभारंभ में विघ्ननाशक गणेश की पूजा।
3	षष्ठी देवी / मातृका पूजन	शिशु की रक्षक देवी षष्ठी माता का पूजन।
4	कलश स्थापना	जल-कलश स्थापना — वरुण देव का आह्वान।
5	संकल्प	पिता हाथ में जल-पुष्प लेकर संस्कार का संकल्प लें।
6	नवग्रह पूजन	शिशु के जीवन में नवग्रहों का शुभ आशीर्वाद।
7	होम / हवन	अग्नि में आहुति — शिशु के दीर्घायु और यश हेतु।
8	नाम संकल्प — कान में नाम	पिता शिशु के दाहिने कान में नाम तीन बार फुसफुसाएं।
9	नाम घोषणा	परिवार के सामने शिशु का नाम तीन बार घोषित करें।
10	सूर्य दर्शन	शिशु को सूर्य देव के दर्शन कराएं — तेज और आयु हेतु।
11	मधु-घृत प्राशन	सोने/चाँदी से शिशु की जीभ पर शहद और घी लगाएं।
12	माता का आशीर्वाद	माँ शिशु को गोद में लेकर स्तनपान कराएं या गोद की रस्म।
13	आरती	शिशु की आरती — परिवार के सभी सदस्य भाग लें।
14	आशीर्वाद समारोह	दादा-दादी, नाना-नानी और बड़े सदस्य शिशु को आशीर्वाद दें।

7. विस्तृत विधि

7.1 पुण्याहवाचन — घर शुद्धि

घर में गंगाजल छिड़कते हुए पुण्याह बोलें। परिवार के अन्य सदस्य "पुण्याहम्" कहकर उत्तर दें।

ॐ पुण्याहं, पुण्याहं, पुण्याहम्।

भवन्तो ब्रुवन्तु — पुण्याहम्।

स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति।

Om Punyaham, Punyaham, Punyaham.

May all declare this as auspicious. Swasti, Swasti, Swasti.

अर्थ: यह क्षण पवित्र है — परिवार मिलकर इस शुभ अवसर की घोषणा करें।

7.2 गणेश पूजन

ॐ गं गणपतये नमः। वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

Om Gam Ganapataye Namah. Vakratunda Mahakaya Suryakoti Samaprabha.

Nirvighnam Kuru Me Deva Sarvakaryeshu Sarvada.

7.3 षष्ठी देवी (माता षष्ठी) पूजन

षष्ठी देवी शिशुओं की रक्षक देवी हैं। इनकी पूजा नामकरण में विशेष है।

ॐ षष्ठी देव्यै नमः।

हे माँ षष्ठी, इस शिशु की रक्षा करो। आयुष्य, आरोग्य और यश प्रदान करो।

षष्ठी देवि प्रसीद त्वं मातर्बालस्य रक्षिणि।

रक्ष रक्ष सदा बालं तस्मै वरं प्रयच्छ मे॥

Om Shashthi Devyai Namah.

O Mother Shashthi, protector of children, bless this child with long life, health and glory.

7.4 संकल्प

पिता बायें हाथ में जल, पुष्प और अक्षत लेकर दायों हाथ ऊपर रखकर संकल्प करें:

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः।

अहं (पिता का नाम) गोत्र (गोत्र का नाम)

मम पुत्रस्य/पुत्र्याः (माता का नाम से उत्पन्न)

आयुर्वर्धनार्थ, यशोवर्धनार्थ, कल्याणार्थं च

श्री गणेश-षष्ठी देवी प्रीत्यर्थ

नामकरण संस्कारं अहं करिष्ये।

I, (father's name), of (gotra) gotra, perform this Namkaran Sanskar for my son/daughter born of (mother's name), for the increase of life, glory and auspiciousness.

7.5 नाम संकल्प — दाहिने कान में नाम

यह नामकरण का सबसे पवित्र क्षण है। पिता शिशु को गोद में लेकर उसके दाहिने कान के पास झुककर तीन बार धीरे से नाम फुसफुसाएं।

ॐ अयं ते योनिः क्रतवे। (तीन बार)

पिता शिशु के कान में बोलें:

"पुत्र/पुत्री, तुम्हारा नाम **(नाम)** है।

आज से तुम **(नाम)** के नाम से जाने जाओगे।

भगवान तुम्हारी रक्षा करें।"

परंपरा: पिता का आवाज़ शिशु के जीवन में प्रथम संस्कार देती है। नाम दाहिने कान में — दाहिना कान शुभ और ज्ञान का प्रतीक है।

7.6 नाम घोषणा

परिवार के सामने शिशु का नाम तीन बार घोषित करें:

ॐ अस्य शिशोः/बालिकायाः नाम **(नाम)** इति।

(नाम), **(नाम)**, **(नाम)** — एवं नाम भवतु।

आयुष्मान् भव। शतायुर्भव। यशस्वी भव।

चिरंजीवी भव। तेजस्वी भव। धर्मार्थी भव॥

The name of this child is (name). May this name be established.

May you be long-lived, renowned, vigorous, virtuous and ever-auspicious.

परिवार मिलकर "भवतु, भवतु, भवतु" — "हो, हो, हो" कहकर स्वीकृति दें।

8. सूर्य दर्शन

नामकरण के बाद पिता/दादा शिशु को बाहर ले जाकर सूर्य देव के दर्शन कराएं। (यदि धूप न हो तो दीपक दिखाएं।)

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात् शुक्रमुच्चरत्।

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्।

नन्दाम शरदः शतं मोदाम शरदः शतम्॥

Tachakshurdevahitam Purastat Shukramuccarat.

Pashyema Sharadah Shatam Jivema Sharadah Shatam.

Nandama Sharadah Shatam Modama Sharadah Shatam.

अर्थ: हे सूर्य देव — इस शिशु को सौ वर्ष देखने की, जीने की, आनंद और प्रसन्नता की शक्ति दो।

9. मधु-घृत प्राशन

सोने की अंगूठी या चाँदी के चम्मच से शिशु की जीभ पर शहद और घी एक साथ लगाएं।

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।

मधु द्यौरस्तु नः पिता॥

May the winds be sweet, may the rivers flow with sweetness. May the nights and mornings be sweet. May Father Heaven be sweet to us.

अर्थ: जीवन में मधुरता आए — वाणी, स्वभाव और बुद्धि में। शहद + घी = वाग्मिता (वाक्पटुता) का प्रतीक।

10. हवन / होम

नामकरण में अग्नि देव की साक्षी में संस्कार संपन्न होता है। पिता-माता मिलकर आहुति देते हैं।

होम के प्रमुख मंत्र

ॐ सं सं सं सं सं सवितृ देव नमः। स्वाहा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। स्वाहा।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वाहा।

Mahamrityunjaya Mantra as Havan Ahuti — for long life of the child.

पिता-माता प्रत्येक "स्वाहा" पर घी की आहुति दें और समिधा (हवन की लकड़ी) डालते रहें।

आयुष्य होम मंत्र

ॐ आ सुन्वन्ति सोमं जनयन्ति वृष्टिम्।

प्रिया देवस्य सवितुः सुवर्ण।

शतं जीव शरदो वर्धमानो

देवा वः सर्वे मनसा ददातु॥ स्वाहा।

O child, may you live a hundred years, growing in strength. May all the divine powers bless you with their wholehearted grace.

11. आरती — शिशु की आरती

आरती करें प्यारे शिशु की, आरती करें प्यारे शिशु की।

माँ-बाप के आँखों की ज्योति, परिवार की खुशी॥ (टेक)

ईश्वर ने भेजा है उसको, देवदूत यह आया।

कुल का दीपक जलाने को, जग में मुस्काया॥ (आरती...)

नाम मिला है आज इसको, पहचान मिली प्यारी।
गणेश माता के आशीर्वाद से, जीवन हो खुशहाली॥ (आरती...)

सौ साल लिए यह बच्चा, स्वस्थ और बलवान।
धर्म-कर्म पथ पर चले, हो ईश का ध्यान॥ (आरती...)

आरती करें प्यारे शिशु की, आरती करें प्यारे शिशु की।
माँ-बाप के आँखों की ज्योति, परिवार की खुशी॥

12. आशीर्वाद मंत्र

आयुष्मान् भव। चिरंजीवी भव।
यशस्वी भव। वर्चस्वी भव। तेजस्वी भव।
धर्मार्थी भव। सुखी भव। सुस्थिर भव।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

May you be long-lived, eternally joyful, glorious, radiant, vigorous.

May you walk the path of Dharma. May you be happy and steadfast. Om Shanti.

यह मंत्र परिवार के प्रत्येक सदस्य शिशु पर पुष्प और अक्षत डालते हुए बोलें।

13. क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

O Lord, forgive all errors in ritual, invocation or devotion. May this Sanskar be complete by your grace.

14. पूजा में भूमिकाएँ

भूमिका	करने वाले	कार्य
पिता (मुख्य यजमान)	बच्चे के पिता	संकल्प, दाहिने कान में नाम फुसफुसाना, होम में आहुति, सूर्य दर्शन।
माता	बच्चे की माँ	शिशु को गोद में रखना, माता षष्ठी पूजन में उपस्थित, होम में आहुति, स्तनपान/गोद रस्म।
दादा	पिता के पिता	शिशु को सूर्य दर्शन कराना, नाम घोषणा में "भवतु" कहना, प्रथम आशीर्वाद।
मंत्र-पाठ	स्वयं परिवार अथवा पुजारी	जो भी उपस्थित होकर मंत्रोच्चारण करें।
दादी/नानी	माँ/बाप की माता	शिशु की आरती, आशीर्वाद में पुष्प-अक्षत डालना, मधु-घृत की थाली।
परिवार	सभी उपस्थित	सभी मंत्रों में साथ बोलना, "भवतु" (स्वीकृति), आरती में भाग, पुष्पांजलि, आशीर्वाद।

15. यजमान विशेष निर्देश

- शिशु का नाम पहले से तय रखें — ज्योतिषी से राशि-नक्षत्र अनुसार अक्षर जरूर पूछें।
- पूजा के दिन शिशु को भूखा न रखें — पूजा से पहले दूध पिला दें।
- शिशु की आरती थाल में दीपक की गर्मी न लगे — थाल दूर से घुमाएं।
- होम में शिशु को अग्नि से दूर रखें — माँ की गोद में रखें।
- नाम घोषणा के बाद परिवार मिठाई वितरित करें।
- शिशु के नाम का पहला अक्षर ज्योतिषीय राशि से हो — यह भविष्य में संस्कारों में उपयोगी होता है।
- संस्कार के बाद शिशु के नाम की पट्टिका या लिखित दस्तावेज़ परिवार को दें।
- सूर्य दर्शन सीधी धूप में न कराएं — छाया में या भोर की हल्की धूप में।

16. संकल्प पत्र

विवरण	भरें
पिता का नाम	
माता का नाम	

विवरण	भरें
गोत्र	
शिशु का लिंग	
जन्म तिथि / समय	
जन्म नक्षत्र / राशि	
घोषित नाम (व्यवहारिक)	
राशि नाम	
देव नाम (यदि अलग हो)	
संस्कार की तिथि एवं स्थान	